

बीवाईपीएल ने ग्रिड की बिजली से संपन्न कराया टी-20 क्रिकेट मैच, नहीं था कोई पावर-बैकअप

- आमतौर पर जेनरेटरों के सहारे ही खेले जाते हैं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच, जबकि दिल्ली-एनसीआर में अभी जेनरेटरों के इस्तेमाल पर लगी हुई है रोक
- मैच में जेनरेटरों का इस्तेमाल होता, तो दिल्ली के वातावरण में घुलता 7500 लीटर डीजल का धुआं
- 20 टन कार्बन का उत्सर्जन भी होता

नई दिल्ली: 4 नवंबर। दिल्ली के अरुण जेटली (फिरोजशाह कोटला) स्टेडियम में, रविवार रात बीवाईपीएल ने अपने ग्रिड की बिजली से, बिना किसी बाधा के भारत और बांग्लादेश के बीच अंतरराष्ट्रीय टी-20 क्रिकेट मैच संपन्न कराया। बेहद चर्चित रहे इस मैच में कोई पावर बैकअप या जेनरेटर नहीं था। यह मैच पूरी तरह से ग्रिड की बिजली पर निर्भर था। ऐसे में, मैच के सफल आयोजन को लेकर तमाम तरह की आशंकाएं जताई जा रही थीं। लेकिन, बीवाईपीएल के इंजीनियरों ने मैच में बिजली संबंधी तकनीकी व्यवधानों की आशंकाओं को गलत साबित करते हुए, टी-20 का सफल आयोजन सुनिश्चित किया।

आमतौर पर जेन-सेट्स के सहारे ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के मैच खेले जाते हैं, ताकि मैच के दौरान बिजली संबंधी कोई दिक्कत न आए, क्योंकि तमाम कोशिशों के बावजूद ग्रिड की बिजली में तकनीकी फॉल्ट की थोड़ी-बहुत आशंका बनी रहती है। लेकिन, अरुण जेटली स्टेडियम में हुए क्रिकेट मैच का मामला कुछ और था, क्योंकि दिल्ली-एनसीआर में एनवायरमेंट पॉल्यूशन कंट्रोल अथॉरिटी यानी ईपीसीए ने डीजल जेनरेटरों के इस्तेमाल पर रोक लगाई हुई है। इसलिए, यहां किसी भी सूरत में डीजल जेन-सेट्स का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। बिजली के लिए पूरी तरह से ग्रिड पर निर्भरता होने के बावजूद इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन में बिजली की वजह से कोई व्यवधान पैदा नहीं हुआ।

डीडीसीए के पास 1800 किलोवॉट बिजली का कनेक्शन था। उसने और 1500 किलोवॉट के अतिरिक्त लोड के लिए बीवाईपीएल से संपर्क किया। इस तरह, स्टेडियम में कुल 3300 किलोवॉट यानी 3.3 मेगावॉट बिजली की जरूरत थी।

एक तो बिजली की इतनी बड़ी मांग और दूसरा, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच — मामले की गंभीरता को देखते हुए बीवाईपीएल ने दिन-रात कार्य किया और न सिर्फ नेटवर्क का विस्तार किया, बल्कि अत्याधुनिक तकनीकों, जैसे — पार्शल डिसचार्ज टेस्टिंग, 10 डेल्टा टेस्टिंग, थर्मल स्कैनिंग, डीजी लॉजिक टेस्ट, आदि का इस्तेमाल कर, बिजली वितरण सिस्टम को फूलप्रूफ बनाया और बिजली के लोड का सटीक डिस्ट्रिब्यूशन किया। इसके अलावा, फॉल्ट होने से पहले ही उसका अनुमान लगाने वाले उपकरणों का भी इस्तेमाल किया गया, ताकि मैच के दौरान बिजली आपूर्ति में कोई व्यवधान आने से पहले ही इंजीनियरों को उसका संकेत मिल जाए और तुरंत उसका समाधान किया जा सके। चूंकि दुनियाभर की नजर इस मैच पर थी, इसलिए प्रिडिक्टिव मेंटेनेंस पर भी खास ध्यान दिया गया। बीवाईपीएल के 75 इंजीनियर्स व टेक्नीशियंस मैच के दौरान बिजली आपूर्ति का जिम्मा संभाले हुए थे और किसी भी आपात स्थिति से निपटने को तैयार थे। शंकर रोड स्थित स्काडा सेंटर से भी बिजली आपूर्ति सिस्टम पर पल-पल नजर रखी जा रही थी।

अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान बिजली की निरंतर आपूर्ति के अलावा, स्थिर वॉल्टेज भी आवश्यक था। क्योंकि, वॉल्टेज में कोई भी उतार-चढ़ाव मैच के प्रसारण के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों को नुकसान पहुंचा सकता था और प्रसारण बाधित हो सकता था।

दिल्ली में हवा की गुणवत्ता दिनोंदिन खराब होती जा रही है, ऐसे में बीवाईपीएल ने पर्यावरण को भी बेहतर बनाने में मदद की। अगर स्टेडियम में जेनरेटरों की बिजली का इस्तेमाल किया जाता, तो वातावरण में करीब 7500 लीटर डीजल का धुआं जाता, जिससे 20

टन सीओ₂ यानी कार्बन, 120 किलो नाइट्रोजन व हाइड्रोकार्बन, तथा 4 किलो 2.5 पार्टिकुलेट मैटर यानी पीएम का उत्सर्जन होता, जिससे यहां की हवा और खराब होती।

इस बड़े टास्क के सफल समापन पर बीवाईपीएल के सीईओ श्री पीआर कुमार ने कहा— डीडीसीए और डीटीएल के साथ मिलकर बीवाईपीएल सभी चुनौतियों पर खरी उतरी और मैच के दौरान निर्बाध व विश्वसीनय बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करने में सफल रही। बीवाईपीएल टीम ने चौबीसों घंटे काम करके वहां सिस्टम को तैयार किया, विभिन्न स्रोतों से वहां बिजली पहुंचाई और स्टेडियम में 3 मेगावॉट से भी अधिक बिजली की मांग को सफलतापूर्वक पूरा किया। वहां बिजली की यह मांग सामान्य के मुकाबले करीब 80 प्रतिशत ज्यादा थी।

प्रमुख बिजली वितरण कंपनियां बीआरपीएल और बीवाईपीएल, रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के बीच संयुक्त उद्यम हैं।
